



विकसित भारत 2047 के लिये महिला-नेतृत्व वाले विकास

डॉ. बंदना श्रीवास्तव

सहायक प्रोफेसर,

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर कॉलेज ऑफ एजुकेशन मटिहानी, मगध विश्वविद्यालय बोधगया बिहार

Corresponding Author - डॉ. बंदना श्रीवास्तव

DOI - 10.5281/zenodo.17120561

संक्षेप:

भारत की विकास गाथा बदल रही है, जहाँ महिलाएँ उच्च कार्यबल भागीदारी, उद्यमिता और वित्तीय पहुँच के माध्यम से आर्थिक विकास को आगे बढ़ा रही हैं। उन्हें सशक्त बनाना अब विकसित भारत 2047 की दृष्टि का केंद्रीय हिस्सा बन गया है।

भारत के आर्थिक परिवर्तन में महिलाएँ किस प्रकार योगदान दे रही हैं?

कार्यबल भागीदारी: भारत की महिला कार्यबल भागीदारी वर्ष 2017-18 में 22% से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 40.3% हो गई, जबकि बेरोजगारी 5.6% से घटकर 3.2% हो गई। ग्रामीण महिलाओं के रोजगार में 96% और शहरी महिलाओं में 43% की वृद्धि हुई, जिससे महिलाओं के लिये अवसरों में मजबूत वृद्धि देखी गई। स्नातक महिलाओं की रोजगार क्षमता वर्ष 2013 में 42% से बढ़कर 2024 में 47.53% हो गई, जबकि स्नातकोत्तर और उससे ऊपर की शिक्षा प्राप्त महिलाओं का श्रमिक जनसंख्या अनुपात (WPR) 2017-18 में 34.5% से बढ़कर 2023-24 में 40% हो गया। पिछले सात वर्षों में, 1.56 करोड़ महिलाएँ औपचारिक कार्यबल में शामिल हुईं, जबकि 16.69 करोड़ महिला असंगठित श्रमिकों ने ई-श्रम पर पंजीकरण कराया और सरकारी कल्याणकारी योजनाओं तक पहुँच प्राप्त की।

कीवर्ड: विकसित भारत 2047, भारत के आर्थिक परिवर्तन, कार्यबल भागीदारी, महिला विकास से महिला-नेतृत्व विकास, नेता के रूप में महिलाएँ, व्यक्तिगत, पेशेवर एवं सामाजिक निर्णयों पर प्रभाव

परिचय :

महिला विकास से महिला-नेतृत्व विकास: एक दशक में जेंडर बजट में 429% की वृद्धि हुई, जो 0.85 लाख करोड़ रुपये (2013-14) से बढ़कर 4.49 लाख करोड़ रुपये (2025-26) हो गया, जो महिला-नेतृत्व वाले विकास की ओर बदलाव का संकेत है। (पी0सी0 "भारत में कृषि विकास" हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2001)

- स्टार्टअप इंडिया जैसी योजनाओं ने महिलाओं की उद्यमिता को बढ़ावा दिया है, जहाँ उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग (DPIIT) से पंजीकृत 50% स्टार्टअप्स में कम-से-कम एक महिला निदेशक है।
- लगभग दो करोड़ महिलाएँ अब लखपति दीदी बन चुकी हैं, जिन्हें नमो ड्रोन दीदी जैसी पहलों का समर्थन प्राप्त है।

- महिला-नेतृत्व वाले सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSMEs) की संख्या लगभग दोगुनी हो गई है। वर्ष 2010-11 में 1 करोड़ से बढ़कर 2023-24 में 1.92 करोड़ हो गई तथा इसने वित्त वर्ष 2021 से 2023 के बीच महिलाओं के लिये 89 लाख अतिरिक्त नौकरियाँ सृजित कीं।
- यह बदलाव महिलाओं के लिये विकास से महिलाओं द्वारा विकास की दिशा में एक निर्णायक कदम है।
- वित्तीय समावेशन योजनाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण रही हैं, जहाँ महिलाओं ने MUDRA ऋणों का 68% (लगभग ₹14.72 लाख करोड़) प्राप्त किया और प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना (PM SVANidhi) के अंतर्गत पथ विक्रेताओं में 44% लाभार्थी महिलाएँ हैं।

चर्चा : महिला-नेतृत्व विकास महत्वपूर्ण है:

- **नेता के रूप में महिलाएँ:** महिलाओं को कल्याण लाभार्थियों से परिवर्तन के वाहक के रूप में बदलना।
- **लैंगिक समानता:** यह रूढ़िवादिता और पीढ़ीगत असमानता को कम करता है, जो महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत 2025 के ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट में 148 देशों में 131वें स्थान पर रहा।
- **आर्थिक विकास:** रोजगार में जेंडर गैप को कम करना भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में संभावित रूप से 30% की वृद्धि कर सकता है।
- **समावेशी विकास:** महिलाओं की भागीदारी उत्पादकता, नवाचार और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाती है।

महिलाओं को सशक्त बनाने से उन्हें स्वायत्तता, अवसरों तक पहुँच और व्यक्तिगत, पेशेवर एवं सामाजिक निर्णयों पर प्रभाव प्राप्त होता है, जो सार्थक आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन को गति प्रदान करता है। (अग्रवाल जे0के0 पाण्डेय (1988)

”सामाजिक शोध अग्रवाल बुक स्टोर आगरा पृष्ठ क्रमांक 11-30)

भारत में महिला-नेतृत्व विकास के समक्ष क्या चुनौतियाँ हैं?

सामाजिक और सुरक्षा संबंधी बाधाएँ: पितृसत्ता निर्णय लेने की क्षमता को सीमित करती है और अवैतनिक घरेलू कार्य को बढ़ाती है।

अल्पायु में विवाह, घरेलू ज़िम्मेदारियाँ और व्यक्तिगत सुरक्षा के खतरे (क्योंकि भारत में **हर घंटे महिलाओं के विरुद्ध 51 अपराध** के मामले दर्ज होते हैं) गतिशीलता, करियर प्रगति और समाज में सक्रिय भागीदारी को सीमित करते हैं।

- **शिक्षा और कौशल अंतराल:** महिला साक्षरता दर 65.4% (2011 जनगणना) है, जो वैश्विक औसत से कम है, जिससे अवसर सीमित होते हैं।

- **शासन और नेतृत्व में अपर्याप्त प्रतिनिधित्व:** महिलाएँ राजनीतिक, कॉर्पोरेट और संस्थागत निर्णय लेने में अभी भी कम प्रतिनिधित्व रखती हैं, जिससे उन पर प्रभाव डालने वाली नीतियों में उनकी भागीदारी सीमित रहती है।

भारत में संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व वैश्विक औसत 25% से काफी नीचे है।

- **डिजिटल और तकनीकी बहिष्करण:** तकनीक, इंटरनेट और डिजिटल साक्षरता तक सीमित

पहुँच महिलाओं को आधुनिक अर्थव्यवस्था में पूर्ण भागीदारी से रोकती है।

- **कार्यबल भागीदारी की बाधाएँ:** महिलाएँ असमान वेतन, ग्लास सीलिंग प्रभाव, व्यवसायिक पृथक्करण, कार्यस्थल पर सुरक्षा और औपचारिक एवं उच्च-कौशल वाले क्षेत्रों में सीमित प्रतिनिधित्व जैसी समस्याओं का सामना करती हैं।

परिणाम:

आर्थिक विकास में महिलाओं को मुख्यधारा में लाने के लिये भारत क्या उपाय अपना सकता है।

- **बाल देखभाल एवं केयर इकॉनमी:** नेशनल क्रेच ग्रिड की स्थापना करना, कार्यस्थलों पर क्रेच की व्यवस्था होना, देखभाल करने वाले कर्मचारियों का पेशेवरकरण तथा अनौपचारिक क्षेत्रों में भी सवेतन मातृत्व अवकाश का विस्तार किया जाए ताकि कार्यबल में महिलाओं की स्थायी भागीदारी सुनिश्चित हो सके।
- **इन्फ्रास्ट्रक्चर एवं डिजिटल समावेशन:** स्वच्छता, परिवहन, जल, आवास में जेंडर-रेस्पॉसिव बजटिंग को अनिवार्य करना।
- महिलाओं के डिजिटल सशक्तीकरण के लिये डिजिटल साक्षरता (Digital Saksharta) और पीएम-गति शक्ति डिजिटल साक्षरता अभियान (PMGDISHA) को राष्ट्रीय बुनियादी ढाँचे और ग्रामीण इंटरनेट परियोजनाओं में शामिल करना।
- **प्रतिनिधित्व एवं शासन:** बोर्डों, पंचायतों, एमएसएमई परिषदों में लिंग कोटा लागू करना;

जेंडर बजट में क्षमता निर्माण करना; महिलाओं के समावेशन के लिये प्रोत्साहनों को जोड़ना।

- **विकेंद्रीकृत लैंगिक योजना:** ग्राम पंचायत, ब्लॉक और जिला स्तर पर लैंगिक कार्ययोजनाएँ संस्थागत करना। इन योजनाओं को महिला सभाओं और स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के इनपुट के साथ सह-निर्मित तथा वार्षिक विकास योजना एवं वित्तपोषण में एकीकृत किया जाए।
- **कार्यस्थल पर सुरक्षा एवं महिलाओं की गतिशीलता का सशक्तीकरण:** महिला-हितैषी अवसंरचना का निर्माण करना, जिसमें सुलभ स्थान हों और यौन उत्पीड़न निवारण अधिनियम, 2013 के तहत आंतरिक शिकायत समितियों (ICCs) की स्थापना करना ताकि उत्पीड़न का समाधान हो सके।
- **शून्य-सहिष्णुता (Zero-Tolerance) की संस्कृति को बढ़ावा देना और शिक्षा, सशक्तीकरण एवं नीतिगत सुधारों के माध्यम से सांस्कृतिक और संरचनात्मक हिंसा का समाधान करना ताकि एक समान एवं सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित हो सके।**

नारी शक्ति से विकसित भारत: भारत के आर्थिक बदलाव में महिलाओं की अग्रणी भूमिका:

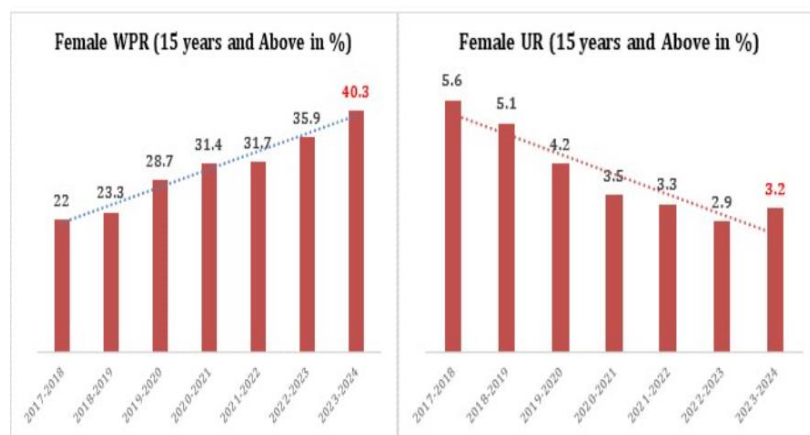
1. पीएलएफएस के आंकड़ों के अनुसार 2017-18 से 2023-24 के बीच महिला रोजगार दर लगभग दोगुनी हो गई है।
2. महिला बेरोजगारी दर 2017-18 में 5.6 प्रतिशत से घटकर 2023-24 में 3.2 प्रतिशत हो गई।

3. ग्रामीण भारत में महिला रोजगार में 96 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 43 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई।
4. ईपीएफओ पेट्रोल डेटा के अनुसार पिछले सात वर्षों में 1.56 करोड़ महिलाएं संगठित कार्यबल में शामिल हुईं।
5. पिछले दशक में जेंडर बजट में 429 प्रतिशत की वृद्धि; 70 केंद्रीय योजनाएं और 400 से अधिक राज्य स्तरीय योजनाएं महिला उद्यमिता को बढ़ावा देती हैं।
6. डीपीआईआईटी पंजीकृत लगभग हर दूसरे स्टार्टअप में कम से कम एक महिला निदेशक है।
7. मुद्रा लोन के लाभार्थियों में 68 प्रतिशत महिलाएं हैं; पीएम स्वनिधि के तहत 44 प्रतिशत लाभार्थी महिलाएं हैं।

8. महिलाओं के नेतृत्व वाले एमएसएमई की संख्या 2010-11 से 2023-24 तक लगभग दोगुनी हो गई है, नारी शक्ति भारत को विकसित भारत की ओर ले जा रही है

महिला कार्यबल की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि:

भारत में महिला कार्यबल की भागीदारी दर में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। पीएलएफएस के आंकड़ों के अनुसार महिला रोजगार दर 2017-18 में 22 प्रतिशत से बढ़कर 2023-24 में 40.3 प्रतिशत हो गई है। इसी अवधि के दौरान बेरोजगारी दर 5.6 प्रतिशत से घटकर 3.2 प्रतिशत हो गई है जो महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों में सकारात्मक वृद्धि को दर्शाता है। यह बदलाव ग्रामीण भारत में और भी महत्वपूर्ण है जहां महिला रोजगार में 96 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि शहरी क्षेत्रों में इसी अवधि के दौरान रोजगार में 43 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।



रिपोर्टों से पता चलता है कि स्नातक महिलाओं की रोजगार क्षमता भी 2013 में 42 प्रतिशत से बढ़कर 2024 में 47.53 प्रतिशत हो गई है। स्नातकोत्तर और उससे ऊपर की महिलाओं में रोजगार दर 2017-18 में 34.5 प्रतिशत से बढ़कर 2023-

24 में 40 प्रतिशत हो गई है। इंडिया स्किल्स रिपोर्ट 2025 के अनुसार 2025 में लगभग 55 प्रतिशत भारतीय स्नातकों के वैश्विक स्तर पर रोजगार योग्य होने की उम्मीद है जो 2024 में 51.2 प्रतिशत से अधिक है। इसके अतिरिक्त, ईपीएफओ पेट्रोल डेटा, संगठित क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है। पिछले

सात वर्षों में, 1.56 करोड़ महिलाएं औपचारिक कार्यबल में शामिल हुई हैं। इस बीच अगस्त तक ई-श्रम पोर्टल में 16.69 करोड़ से अधिक असंगठित महिला श्रमिकों का पंजीकरण दर्ज किया गया है जिससे उन्हें सरकार की विभिन्न सामाजिक कल्याण योजनाओं तक पहुंच मिली

। (मेहता डॉ. बल्लभदास तिवारी “आर्थिक विकास और नियोजन” म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 1990)

महिला विकास से महिला-नेतृत्व वाले विकास की ओर अग्रसर भारत:

भारत सरकार के प्रयास महिला उद्यमियों के विकास में योगदान दे रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर, 15 मंत्रालयों की 70 केंद्रीय योजनाएं और 400 से अधिक राज्य-स्तरीय योजनाएं महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने पर केंद्रित हैं। पीएलएफएस के आंकड़े बताते हैं कि महिला स्व-रोजगार में 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 2017-18 में जहां यह 51.9 प्रतिशत था, 2023-24 में बढ़कर 67.4 प्रतिशत हो गया है। पिछले दशक में जेंडर बजट में 429 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो वित्त वर्ष 2013-14 (संशोधित अनुमान) में 0.85 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर वित्त वर्ष 2025-26 में 4.49 लाख करोड़ रुपये हो गया है। यह महिलाओं के विकास से महिलाओं के नेतृत्व में विकास की ओर एक व्यापक बदलाव को दर्शाता है, जिसमें रोजगार, रोजगार योग्यता, उद्यमिता और कल्याण पर विशेष ध्यान दिया गया है।

स्टार्टअप इंडिया जैसे कार्यक्रमों ने एक समृद्ध व्यवस्था को बढ़ावा दिया है, जहां लगभग 50 प्रतिशत डीपीआईआईटी पंजीकृत

स्टार्टअप्स में यानी 1.54 लाख से ज्यादा स्टार्टअप्स में से 74,410 में कम से कम एक महिला निदेशक है। आज लगभग दो करोड़ महिलाएं लखपति दीदी बन चुकी हैं। नमो ड्रोन दीदी और दीनदयाल अंत्योदय योजना जैसे प्रमुख कार्यक्रम भी इस बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और उन्हें सतत विकास के लिए आवश्यक संसाधन और अवसर प्रदान कर रहे हैं। महिलाओं के स्व-रोजगार में वृद्धि का एक अन्य महत्वपूर्ण कारक प्रधानमंत्री मुद्रा योजना है, जो वित्तीय समावेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कुल मुद्रा ऋणों में से 68 प्रतिशत (14.72 लाख करोड़ रुपये मूल्य के 35.38 करोड़ से अधिक ऋण) महिलाओं को मिले हैं। इसी प्रकार, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के तहत रेहड़ी-पटरी वालों को सशक्त बनाया गया है। इस योजना के लगभग 44 प्रतिशत लाभार्थी महिलाएं हैं। ये पहल पूरे भारत में महिलाओं के बीच आर्थिक आत्मनिर्भरता की एक नई क्रांति ला रही हैं। इसके अतिरिक्त, महिलाओं के नेतृत्व वाले सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) भी आर्थिक विस्तार के प्रमुख कारक के रूप में उभरे हैं, जिन्होंने वित्त वर्ष 2021 से वित्त वर्ष 2023 तक महिलाओं के लिए 89 लाख से अधिक अतिरिक्त नौकरियां पैदा की हैं। महिलाओं के स्वामित्व वाले ऐसे प्रतिष्ठानों की हिस्सेदारी 2010-11 में 17.4 प्रतिशत से बढ़कर 2023-24 में 26.2 प्रतिशत हो गई है। महिलाओं के नेतृत्व वाले एमएसएमई की संख्या भी लगभग दोगुनी हो गई है जो 2010-11 में 1 करोड़ से बढ़कर 2023-24 में 1.92 करोड़ हो गई है। यह भारत के आर्थिक भविष्य को आकार देने में महिलाओं की बढ़ती भूमिका को रेखांकित करता है।

नारी शक्ति भारत को विकसित भारत की ओर ले जा रही है:

महिलाएं अब केवल भागीदार नहीं हैं, बल्कि भारत के आर्थिक विकास की रीढ़ हैं। आज, महिलाएं विकास की राह पर अग्रणी भूमिका निभा रही हैं और मोदी सरकार एक ऐसी समावेशी व्यवस्था बनाने के लिए प्रतिबद्ध है जो शिक्षा, कौशल विकास, उद्यमिता और समान कार्यबल अवसरों के माध्यम से नारी शक्ति को सशक्त बना सके।

निष्कर्ष:

महिलाएं भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन रही हैं, ग्रामीण उद्यमों से लेकर कॉर्पोरेट नेतृत्व तक परिवर्तन ला रही हैं, जैसा कि जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा था, "किसी राष्ट्र की स्थिति का आकलन उसकी महिलाओं की स्थिति से किया जा सकता है," भारत नारी शक्ति को मूर्त रूप देते हुए विकसित भारत 2047 की ओर बढ़ रहा है। वर्ष 2047 तक भारत को विकसित बनाने के लिए कार्यबल में 70 प्रतिशत महिला भागीदारी सुनिश्चित करने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। महिला सशक्तिकरण राष्ट्रीय प्रगति का एक प्रमुख कारक है और आज भारत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक परिवर्तनकारी बदलाव का साक्षी बन रहा है। अब महिलाएं पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं, वे बंधनों को तोड़ रही हैं और देश के आर्थिक भविष्य को आकार देने की ज़िम्मेदारी संभाल रही हैं। ग्रामीण उद्यमियों से लेकर कॉर्पोरेट नेतृत्व तक, महिलाएं विकसित भारत की ओर भारत के अभियान

का नेतृत्व कर रही हैं। वर्ष 2047 तक भारत को विकसित बनाने के लिए कार्यबल में 70 प्रतिशत महिला भागीदारी सुनिश्चित करने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। महिला सशक्तिकरण राष्ट्रीय प्रगति का एक प्रमुख कारक है और आज भारत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक परिवर्तनकारी बदलाव का साक्षी बन रहा है।

संदर्भ सूची:

1. जैन पी. सी. "भारत में कृषि विकास" हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 2001
2. अग्रवाल जे.के. पाण्डेय (1988) "सामाजिक शोध अग्रवाल बुक स्टोर आगरा पृष्ठ क्रमांक 11-30
3. मेहता डॉ. बल्लभदास तिवारी "आर्थिक विकास और नियोजन" म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल 1990
4. दमाहिया कृष्णा कुमार "कृषि विकास की समस्याएं" मिल्लतल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2001
5. डॉ. चतुर्भुज मामोरिया भारत का आर्थिक समस्याएँ, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 2007-08